प्रस्थिति की अवधारणा

Concept of status

समाजशास्त्र में प्रस्थिति की अवधारणा बहुत महत्वपूर्ण है क्योकि सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति की केवल एक स्थिति ही नही होती बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में उसकी एक साथ अनेक स्थितियों होती हैं। उदा0 के लिए एक व्यक्ति ऑफिस में अधिकारी है तो खेल के मैदान में खिलाड़ी, परिवार में पिता, पुत्र, भाई, चाचा जैसे कई पदों पर आसीन होती हैं। यानि कि सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति को विभिन्न नियमों एंव मूल्यों द्वारा जो पद प्राप्त होता है, समाजशास्त्रीय भाषा में उसी को व्यक्ति की 'प्रस्थिति' कहते हैं। प्रस्थिति को परिभाषित करते हुए राल्फ लिण्टन 'the cultural Background of Personality' में लिखते है, "सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत किसी व्यक्ति को एक समय विशेष में जो स्थान प्राप्त होता है, उसी को उस व्यक्ति की प्रस्थिति कहा जाता हैं।"

इस आधार पर प्रस्थिति की विशेषताएं निम्नवत् हैं–

(1) प्रस्थिति समाज द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थागत पद हैं।

(2) व्यक्ति एक समय में एक ही स्थिति धारण नही करता, इसलिए प्रस्थिति की प्रकृति एकाकी नही होती। किंग्सले डेविस इस दशा को 'प्रस्थिति संकुल' कहते हैं।

(3) प्रस्थिति से प्रतिष्ठा नही मिलती। प्रतिष्ठा से व्यक्तिगत गुणों का होना आवश्यक हैं।

(4) व्यक्ति की सक्रियता या निष्क्रियता के कारण प्रस्थिति की प्रकृति अस्थायी होती हैं। यह विशेषता अर्जित प्रस्थिति पर लागू होती है

(5) कई बार जब व्यक्ति एक साथ अनेक प्रस्थितियाँ धारण करता है, तब अक्सर एक प्रस्थिति के मानदण्डों का पालन करने से दूसरी प्रस्थिति के दायित्वों पर आघात पहुचता है, जिसे 'प्रस्थिति संघर्ष' कहते हैं।

प्रत्येक प्रस्थिति के साथ भूमिका सम्बद्ध होती हैं।

सामाजिक प्रस्थिति के प्रकार

प्रस्थितियों को उनकी प्रकृति के अनुसार दो भागों में विभाजित किया जा सकता हैं–

(1) **प्रदत्त प्रस्थिति** :– ऐसी प्रस्थिति जो परम्पराओं, सामाजिक मूल्यों के द्वारा बिना किसी प्रयास से व्यक्ति को प्राप्त होती है, उसे प्रदत्त प्रस्थिति कहते हैं। उदा0 पिता, माता, ब्राह्मण, वृद्ध आदि। प्रदत्त प्रस्थिति के आधारो में लिग-भेद, आयु-भेद, नातेदारी, प्रजाति-भेद, जाति-भेद, जन्म की वैधता हैं।

(2) अर्जित प्रस्थिति–वह प्रस्थिति जिसे व्यक्ति अपने प्रयत्नों, गुणों, योग्यता के द्वारा प्राप्त करता है, अर्जित प्रस्थिति कहलाती है, उदा0 डॉक्टर, इंजिनियार, कलाकार, शिक्षक, राजनेता

आदि। अर्जित प्रस्थिति के निर्धारक तत्वों में सम्पति, शिक्षा, अविष्कार, राजनीतीक अधिकार, व्यवसाय की प्रकृति हैं।

दोनों ही प्रस्थितियों अपनी प्रकृति के आधार पर एक-दूसरे से भिन्न हैं।

प्रदत्त प्रस्थिति परम्परात्मक रूप से स्वयं ही व्यक्ति को मिल जाती हैं जबकि अर्जित प्रस्थिति को व्यक्ति अपनी योग्यानुसार प्राप्त करता हैं।

योग्यता से सम्बद्ध होने के कारण अर्जित प्रस्थिति परिवर्तनशील है जबकि प्रदत्त प्रस्थिति स्थायी हैं।

प्रदत्त प्रस्थिति एंव भूमिका में सामंजस्य होना सदैव आवश्यक नही जबकि अर्जित प्रस्थिति में ऐसा होना आवश्यक हैं। प्रदत्त प्रस्थिति बन्द समजों की विशेषता है, जबकि अर्जित प्रस्थिति

योग्यता से सम्बद्ध होने के कारण अर्जित प्रस्थिति परिवर्तनशील है जबकि प्रदत्त प्रस्थिति स्थायी हैं।

प्रदत्त प्रस्थिति एंव भूमिका में सामंजस्य होना सदैव आवश्यक नही जबकि अर्जित प्रस्थिति में ऐसा होना आवश्यक हैं। प्रदत्त प्रस्थिति बन्द समजों की विशेषता है, जबकि अर्जित प्रस्थिति खुले समाजों की।

यह दोनों ही प्रस्थितियाँ एक दूसरे से भिन्न होने के बावजूद एक दूसरे की पूरक हैं इन दोनों प्रस्थितियों से संबधित भूमिकाओं का निर्वाह होते रहने से सामाजिक व्यवस्था संतुलित बनी हैं।